

Ashtashloki Ramayanam

——
अष्टश्लोकी-रामायणम्

——
Document Information



Text title : Ashtashloki Ramayanam with Hindi meaning

File name : aShTashlokIrAmAyaNam.itx

Category : raama, aShTaka

Location : doc_raama

Author : nityAnanda shAstrI dAdhIcha

Transliterated by : Pradeep Kumar Jha

Proofread by : Pradeep Kumar Jha

Description/comments : Each verse and dohA starts with letters from the shloka and dohA on the top

Latest update : November 27, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 27, 2023

sanskritdocuments.org



Ashtashloki Ramayanam

અષ્ટશ્લોકી-રામાયણમ્



॥ ઝં શ્રી ગણેશાય નમઃ ॥

॥ શ્રીરામઃ સર્વમહુગલમ્ ॥

ભગવાન્ શ્રીરામ ને શરણાગત-રક્ષા કે લિએ જો પ્રતિજ્ઞા કી થી, ઉસકા ચિત્રણ મહર્ષિ વાલ્મીકિ ને અપની રામાયણ કે યુદ્ધકાણ્ડ મેં બડ઼ા હૃદયાકર્ષક કિયા હૈ; જિસે અનૂઠા સમજતે હુએ મહર્ષિ વેદવ્યાસજી ને ભી અપની અધ્યાત્મરામાયણ કે ઉસી કાણ્ડ મેં જ્યો-કા-ત્યો અપનાયા હૈ । દેખિએ :-

શ્લોક -

સકૃદેવ પ્રપન્નાય તવાસ્મીતિ ચ યાયતે ।

અભયં સર્વભૂતેભ્યો દદાભ્યેતદ્ વ્રતં મમ ॥

- વાલ્મિકી રામાયણ યુદ્ધકાણ્ડ અધ્યાય ૧૮, શ્લોક ૩૩

- અધ્યાત્મરામાયણ યુદ્ધકાણ્ડ અધ્યાય ૩, શ્લોક ૧૨

ભાવાનુવાદ દોહા -

“તેરા હૂં” યો સરન આ જાયે કોઈ જીવ ।

મૈં ઉસકો દેતા અભય યહ વ્રત મમ સુગ્રીવ ॥

ઝં નમો નારાયણાયાસ્તુ ।

“ઝં”કાર રૂપાય સમગ્રચન્દ્રા

“ન”નાય લોકત્રિતયેશ્વરાય ।

“મો”ઘેતરાઙ્ઘિ-સ્મરણ-પ્રમાણા

“નારાયણાયાસ્તુ” નતિઃ પરાય ॥

Ashtashloki Ramayanam

अष्टश्लोकी-रामायणम्

श्रीरामः सर्वमङ्गलम् ।

श्लोक -

सङ्कष्टेव प्रपन्नाय तवास्मीति य याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाभ्येतद् व्रतं मम ॥

दोहा -

“तेरा हूँ” यों सरन आ जाये कोई श्रुव ।
मैं उसको देता अभय यल व्रत मम सुग्रीव ॥

“स”खित्पदानन्दमयो रमेशः
“कृ”पानिधी रावणमुष्यं-उत्थै ।
“दृ”वैः स्तुतोऽस्यां भुवि रामनाम्ना-
“ऽव”तीर्णा आर्यानिवितुं य धर्मम् ॥ १ ॥

“ते”जस्वी देवों की स्तुति सुन विष्णु सखिदानन्द-स्वरूप ।
“रा”म नाम से पुण्य-भूमि में प्रकट धर अवतार अनूप ॥
“हूँ” डा-हूँकी रचते रावण आदि राक्षसों का क्षय-कर्म ।
“यों” द्विर “त्राडि” मचाते जन की रक्षा से रचना था धर्म ॥ १ ॥

“पू”अहः किशोरः पितुराकुलोत्था-
“ऽऽप”त्रेन गत्वा सल कौशिकेन ।
“ना”शं नयन् सावरजो निशाटान्
“य”ज्ञं तदीयं प्ररक्ष रामः ॥ २ ॥

“स”रल किशोर सुनम्र, पिता का आङ्गल भी पाकर आदेश ।
“र”धुवर सानुज आश्रित विश्वामित्र-सङ्ग जा वन-प्रदेश ॥
“न”र-भक्षक यज्ञान्तक राक्षस-सेना का करते संडार ।
“आ”र्ष यज्ञ-रक्षा के कारण बने; भुला तब धर्म-द्वार ॥ २ ॥

“त”तो मुनिस्त्रीं स्फुटयन् पदा शिलां

“वा”स्त्वादि-रत्न्यां मिथिलां ददर्श सः ।

“मी”मांसमानषु बलं य राजसु

“ति”ष्ठन् निमेषं शिवयापमात्मन् ॥ ३ ॥

“जा”ते लुभे वडौं से, पद से छूकर शिला अलव्योद्धार ।

“ये”ष्टा को दियला कर प्रभु ने देयी मिथिला सुगुह-प्रकार ॥

“को”ठ अपने कष्ट राम के शौर्य जाँचते रहे बडःे ।

“ठ”श-धनुष को तभी उनलोंने तोडःा; ओक निमेष बडःे ॥ ३ ॥

“य”कोरनेत्रा परमेकमित्रा

“या”प्राग्यमैषीदिलव जनकी सा ।

“य”कोरनेत्रा परमे कमित्रा

“ते”नोपयेमेऽस्मि रघूत्तमेन ॥ ४ ॥

“ञ्ज”वन-मित्र ओक जो रभती जिन्हें पूर्वं अति याद युकी ।

“व”ड ली छच्छुक यतुरशिरोमणि समजे, मुजे सराड युकी ॥

“मै”के में डी उन सीता को ब्याड लिया रघुवर ने ।

“उ”स सुदिनीय विवाडोत्सव की मडिमा को कवि ड्या बरनी ॥ ४ ॥

“अ”ङ्गीकृतं प्राग् वरमाप्य डैकयी

“भ”र्त्रा वनं गन्तुमशात् सुताञ्जम् ।

“यं”यौवराज्यार्थमसञ्जयत् पिता,

“स”र्पो विधिश्च स्त उभौ छि जिह्गौ ॥ ५ ॥

“स”ञ्ज किया जिस सुत को नृप ने यौवराज्य-पद को पाने ।

“को”पित उसे डैकयी बोली, पति को बना विपिन जाने ॥

“दृ”ना था नृप को थाती वर, माँगा था उसने तब डी ।

“ता”रतम्य ड्या साँप व विधि में, दोनोँ लों यट कुटिल कडीम् ॥ ५ ॥

“व”ने भरादौ निडते, दशास्थो

“भू”त्वा समाथो डरति स्म सीताम् ।

“ते”भ्यो निरैत्तत् स तु दण्डकेभ्यो

“यो”ज्यां सुकण्ठेन तथाऽऽप मैत्रीम् ॥ ६ ॥

“अ”ब अरण्य में भरादि राक्षस रघुवर ने ज्यों डी मारे ।

“ल”रसक माया कर रावण ने उरी जानकी छल धारे ॥

“य”उ दण्डक वन छोड़ः यहाँ से चले राम द्विर भी आगे ।

“य”थायोग्य सुग्रीव-आर्त को मित्र किया, आश्रय माँगे ॥ ६ ॥

“द”एउं दद्वेडधार्मिक-वालिन, अग-

“दा”भ्राडभिषेकस्य सुकण्ठमार्यत् ।

“ये”ते उनूमाञ्जनकात्मजास्यै

“तद्”-वृत्तमाप्यादुष्योः कृतार्थः ॥ ७ ॥

“उ”ठी दुराचारी बालो को प्राणदण्ड का पात्र किया ।

“प्र”त धारी सुग्रीव-मित्र को तब ही उसका राज्य दिया ॥

“त”न-मन से अनुमान । जुटे द्विर, सकुशल सीता को पाया ।

“म”धुरामृत उन दम्पतियों की कर्णाञ्जलि में टपकाया ॥ ७ ॥

“प्र”ती दशास्यं स जघान, तत्पदं

“तं” भक्तमानेष्ट, य आश्रितः पुरा ।

“म”न्त्राभिषिक्तो रघुराट् स सीतया

“म”नोरथान् राज्यमथाप्य पूर्णवान् ॥ ८ ॥

“म”र्यादापुरुषोत्तम प्रभु ने उस मदान्ध रावण को मार ।

“सु”दृष्ट विभीषण को दे उसका सारा साज्य निभाया प्यार ॥

“ग्री”वा में वनमाल, मुकुट शिर, पा मन्त्रों से नृपालिषेक ।

“व”ही राज्य पा सीतापति ने किये मनोरथ पूर्ण अनेक ॥ ८ ॥

अष्टश्लोकी-रामायणमिति पद्यानुवाद संवलितम् ।

रामाश्रयार्थ-सिद्धयै नित्यानन्देन शास्त्रिणा रचितम् ॥

॥ धृति श्री नित्यानन्दशास्त्री दाधीयविरचिता अष्टश्लोकी-रामायण समाप्ता ॥

ॐ श्री सीतापतये रामचन्द्राय नमः ॥

ॐ श्री रामानुज भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नेभ्यो नमः ॥


ॐ उं अनुमते नमः ॥

यरणों के प्रथमाक्षरों में छुं-छेँ छिभाते लुअे मैंने भावानुवाद-सहित यउ अष्टश्लोकी-रामायण रचकर भगवद्-भक्तों की सेवा में उपस्थित की है । आशा है, इसका सदुपयोग करते लुअे वे लाभ उठायेंगे ।


- नित्यानन्द शास्त्री दाधीय ।

Composed by Nityanandashastry Dadhicha

Encoded and proofread by Pradeep Kumar Jha

——
Ashtashloki Ramayanam

pdf was typeset on November 27, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

